पाठ 14

मध्यप्रदेश के मेले

प्रिय मित्र अभिषेक,

98, यमुनानगर, ग्वालियर,

नमस्कार,

12.01.08

आशा है तुम सकुशल होगे। बहुत समय से तुम्हारा कोई पत्र नहीं मिला। पिछले दिनों हमारे नगर में जन्माष्टमी मेले का आयोजन हुआ। इस अवसर पर तुम्हारी बहुत याद आई। पिछले वर्ष तो तुम भी मेरे साथ थे।

एक बात जानकर तुम्हें प्रसन्नता होगी कि एक बार मुझे कुंभ-मेला देखने का भी अवसर मिला।

जैसा कि तुम जानते हो भारत एक विशाल देश है। यहाँ की गौरवपूर्ण संस्कृति रही है। यह हमारी अपनी पहचान है। हमारे यहाँ वैदिक काल से मेले लगते आ रहे हैं। सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मेलों का

शिक्षण संकेत

- बच्चों से पत्र-लेखन की उपयोगिता पर चर्चा करें।
- विभिन्न प्रकार के पत्रों का कक्षा में वाचन करवाएँ।
- बच्चों को पत्र-लेखन के नियमों की जानकारी दें।
- मध्यप्रदेश में या आपके आस-पास लगने वाले किसी मेले के बारे में बच्चों से चर्चा करें।

आयोजन पूरे भारत वर्ष में होता है। इसी सांस्कृतिक मेले के रूप में उज्जैन का कुंभ–मेला पौराणिक–काल से लगता आ रहा है। पुराणों के अनुसार 'समुद्र मंथन' के समय जब अमृत निकला तो उसकी कुछ बूँदे विभिन्न स्थानों पर गिरीं, इसीलिए कुंभ मेले उन स्थानों पर लगते हैं जहाँ अमृत की बूँदे गिरीं, वे चार स्थान हैं– हरिद्वार, प्रयाग (इलाहबाद) उज्जैन और नासिक। यह कुंभ मेले तीन वर्ष बाद क्रमशः आयोजित होते हैं। अतः प्रत्येक स्थान पर 12 वर्ष बाद मेला लगता है। इन मेलों में विभिन्न जाति और धर्म के लोग पूरे उत्साह से सम्मिलित होते हैं। वे धार्मिक और पौराणिक मान्यताओं का निर्वाह करते हैं।

उज्जैन के कुंभ–मेले को 'सिंहस्थ' कहते हैं। सिंहस्थ–मेला क्षिप्रा के किनारे लगता है। कुंभ–मेंलों में देश–भर के प्रसिद्ध महात्माओं, संतों, आचार्यों और विद्धानों के विचार–उपदेश सुनने को मिलते हैं। खूब आनंद आता है।

मित्र! जब मेलों की बात चली है तो यह भी जानना जरूरी है कि मेले क्या हैं? इनकी क्या उपयोगिता और महत्व है। मेले हमारी सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं।

हमारे देश में प्रमुख रूप से सांस्कृतिक–मेले, लोक–मेले, व व्यापारिक–मेले लगते हैं। सांस्कृतिक मेलों के अन्तर्गत विभिन्न धर्म एवं सम्प्रदायों के अपने–अपने मेले लगते हैं। विभिन्न प्रान्तों में क्षेत्र के आधार पर लोक–मेलों का आयोजन होता है, वहीं आज के व्यावसायिक संदर्भ में अब व्यापारिक–मेलों का भी आयोजन होने लगा है।

सांस्कृतिक मेले प्रायः नदियों के किनारे लगते हैं। गंगा, यमुना, नर्मदा, क्षिप्रा, गोदावरी, कावेरी,

सोन, पहूज आदि पवित्र नदियाँ मानी गई हैं। ऐसा माना जाता है कि विशेष अवसरों पर जो लोग इन नदियों में स्नान करते हैं उन्हें पुण्य-लाभ होता है।

एक बात और भी है मेलों में विभिन्न स्थानों के लोग एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं। उन्हें एक ही स्थान पर तरह-तरह की वस्तुएँ प्राप्त हो जाती हैं।

मेलों में जो विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम होते हैं उनसे बच्चे, बूढ़ों और युवाओं का खूब मनोरंजन होता है। यहाँ पर मनोरंजन के कई साधन नाटक मंडली, सर्कस, जादू के खेल और झूले आते हैं।

मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में लोक-मेलों का आयोजन होता है। जैसे बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड में "भुजरिया" मेला लगता है। भुजरिया मेले में 'भुजरिया' अपने आत्मीय जनों को भेंट की जाती हैं।

इसी तरह आदिवासी अंचल विशेषकर धार, झाबुआ जिले में 'भगोरिया मेला' बहुत प्रसिद्ध है। होली से पहले लगने वाले इन मेलों में आदिवासी स्त्री पुरुष खूब सजधजकर आते हैं। इन मेलों में मांदल (बड़ा ढ़ोल) बजाकर समूह में नृत्य करते हैं और अपने जीवन-साथी का चयन करते हैं। इन मेलों को देखने दूर-दूर से लोग आते हैं।

तुम्हें मालूम है कि अपना मध्यप्रदेश विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ है। यहाँ गणगौर, गणेश-उत्सव, नवरात्रि, मकर संक्रान्ति, वसंत पंचमी और शिवरात्रि आदि अन्य महत्वपूर्ण पर्वों पर नगर और ग्रामों में मेले लगते हैं। नवरात्रि के मेले में दुर्गा और काली देवी की विशेष पूजा अर्चना की जाती है। इस अवसर पर आकर्षक झाँकियाँ सजायी जाती हैं।

आओ, अब हम तुम्हें मध्यप्रदेश के दो व्यावसायिक मेलों के बारे में भी बता दें- भोपाल और ग्वालियर में विशाल स्तर पर व्यावसायिक मेले लगते हैं।

इन मेलों में छोटी से छोटी वस्तु से मोटर, कार, स्कूटर, मोटर साईकिल आदि की बिक्री बड़े स्तर पर होती है। यहाँ पर बहुत सी दुकानें और झूले आते हैं।

मेरा अनुरोध है कि तुम इस बार समय निकाल कर ग्वालियर मेले में जरूर आओ। तब स्वयं देखना इस मेले में तुम्हें कितना मजा आता है।

मैं तुम्हारे आने के साथ-साथ पत्र की भी प्रतीक्षा करूँगा।

आदरणीय बाबूजी और आदरणीय अम्माजी को सादर चरणस्पर्श। छोटों को प्यार-स्नेह।

तुम्हारा प्रिय मित्र

सौरभ

▸ लेखकगण

समुद्र मंथन- श्रीमद् भागवत पुराण के अनुसार देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया था जिससे 14 रत्न प्राप्त हुए थे। ये चौदह रत्न थे-कालकूट विष, कामधेनु, कल्पवृक्ष, कौस्तुभमणि, उच्चैश्रवाअश्व, ऐरावत गज, रम्भा अप्सरा, सुरा, लक्ष्मी, चन्द्रमा, शार्ंग धनुष, धन्वन्तरि, पांचजन्य शंख एवं अमृत कलश।

नए शब्द

जन्माष्टमी = भगवान कृष्ण का जन्मदिन। **क्षिप्रा** = एक नदी का नाम। **गौरवपूर्ण** = सम्मानजनक। **भुजरिया -मेला** = एक मेले का नाम। **भुजरिया** - गेहूँ के हरे पौधे (बुन्देलखण्ड एवं बघेलखण्ड में प्रचलित) **मांदल**-एक बड़ा ढोल (जिस पर आदिवासी स्त्रियाँ एवं पुरुष नृत्य करते हैं।) **विसर्जित** = सम्मानपूर्वक जल में प्रवाहित करना। **विस्तृत क्षेत्र** = बड़ा क्षेत्र।

अनुभव विस्तार

1. पत्र से खोजकर बताइए-

(क) सही जोड़ी बनाइए

भगोरिया-मेला	-	बुंदेलखण्ड, बघेलखण्ड में लगता है।
व्यापारिक-मेला	-	उज्जैन में लगता है।
कुंभ-मेला	-	ग्वालियर में लगता है।
भुजरिया-मेला	-	धार, झाबुआ में लगता है।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

1. मध्यप्रदेश में व्यापारिक मेलों का आयोजन ....स्थानों पर होता है।
2. मध्यप्रदेश में कुंभ-मेला...................में लगता है।
3. 'प्रयाग' को अब ....नाम से जाना जाता है।
4. एक ही स्थान पर कुंभ मेला ....वर्ष बाद आता है।

2. अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए-

1. उज्जैन का सिंहस्थ मेला किस नदी के तट पर लगता है?

2. मेले हमारी किस बात की पहचान हैं?
3. भुजरिया किन लोगों को भेंट की जाती हैं?

3. लघु उत्तरीय प्रश्न-

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन से पाँच वाक्यों में लिखिए-

1. कुंभ-मेले कहाँ-कहाँ लगते हैं?
2. मेलों की उपयोगिता क्या है?
3. भगोरिया मेले के बारे में लिखिए।
4. कुंभ-मेलों में श्रद्धालुजनों को क्या-क्या लाभ मिलता है?

भाषा की बात

1. कुंभ -मेलों में देशभर के सभी सम्प्रदाय के प्रसिद्ध महात्माओं, सन्तों, आचार्यों और विद्वानों के विचार और उपदेश सुनने का अवसर मिलता है।

मेलों में आयोजन होते हैं उनसे बच्चों, स्त्रियों, वृद्धों और युवाओं सभी का मनोरंजन होता है।

उपर्युक्त रेखांकित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें। यहाँ महात्मा से महात्माओं, सन्त से संतों, आचार्य से आचार्यों, विद्वान से विद्वानों शब्द की रचना हुई है। इसी तरह मेला से मेलों, बच्चा से बच्चों, स्त्री से स्त्रियों, वृद्ध से वृद्धों और युवा से युवाओं शब्द का निर्माण हुआ है। दी गई तालिका में रखांकित अंशों को समझें-

एक वचन	बहुवचन
महात्मा	महात्माओं
सन्त	सन्तों
आचार्य	आचार्यों
विद्वान	विद्वानों
मेला	मेलों
वृद्ध	वृद्धों
युवा	युवाओं

उपर्युक्त तालिका में महात्मा, सन्त, आचार्य, विद्वान, मेला, वृद्ध और युवा शब्द से एक होने का बोध होता है। इसी तरह महात्माओं, सन्तों, आचार्यों विद्वानों, मेलों, वृद्धों, युवाओं से एक से अधिक होने का बोध होता है।

शब्द के जिस रूप से उसके एक या एक से अधिक होने का पता चले उसे वचन कहते हैं।

वचन के भेद

वचन के भेद

एक वचन | **बहु वचन**

एक वचन – शब्द के जिस रूप से उसके एक होने का बोध हो उसे एकवचन कहते हैं। जैसे- बिल्ली, घोड़ा, केला, नदी, रोटी, कविता।

बहुवचन– शब्द के जिस रूप से उसके एक से अधिक होने का बोध होता है, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे–बिल्लियाँ, घोड़े, केले, नदियाँ, रोटियाँ, कविताएँ

1. नीचे लिखे शब्दों के बहुवचन बनाओ–

आँख	–	....	तोता	–	....
गाय	–	....	दुकान	–	....
भैंस	–	....	जाति	–	....
बकरी	–	....	टोपी	–	....

2. निम्नलिखित वाक्यों में से रेखांकित शब्दों के वचन पुनः बदलकर लिखिए–

1. हमने बाजार से पुस्तकें खरीदी। ....
2. पुलिस ने कुछ चोर पकड़े। ....

ध्यान दीजिए

पत्र हमारी भावनाओं और विचारों को एक दूसरे तक पहुँचाने और प्राप्त करने के सरल एवं प्रभावी माध्यम हैं। पत्र के कुछ सामान्य अंग होते हैं। नीचे बने पत्र के प्रारूप को ध्यान से देखिए। पत्र के मुख्य अंग इस प्रकार हैं–

1. **पत्र भेजने वाले का पता एवं दिनांक 2. सम्बोधन 3. अभिवादन 4. विषयवस्तु 5. अभिनिवेदन, नाम आदि।**

प्रिय मित्र अभिषेक (सम्बोधन) 98, यमुना नगर, ग्वालियर

नमस्कार (अभिवादन) 12.10.2007

(पत्र भेजने वाले का पता एवं दिनांक)

आशा है तुम सकुशल होगे।...........विषयवस्तु...

....

....

छोटों को प्यार।

सौरभ सिन्हा

नूतन बिहार, टीकमगढ़ (म.प्र.) 472001

(पत्र पाने वाले का स्पष्ट नाम एवं पूरा पता)

तुम्हारा प्रिय मित्र

सचिन

प्रश्न उपर्युक्त पत्र के प्रारूप के आधार पर सही जोड़ियाँ बनाइए-

सम्बोधन	–	12 अक्टूबर 2007
अभिवादन	–	प्रिय मित्रअभिषेक
पत्र प्रेषक का पता	–	नमस्कार
दिनांक	–	98, यमुना नगर, ग्वालियर

यह भी जानें-

पत्र के प्रकार

1. **अनौपचारिक पत्र-** सामाजिक एवं व्यावहारिक स्तर के व्यक्तिगत पत्र
2. **औपचारिक पत्र** - व्यावसायिक/व्यापारिक, बधाई, शोक, निमंत्रण पत्र विशेष अवसरों, समाचार पत्र-पत्रिकाओं के लिए लिखे गए पत्र।
3. **शासकीय, अर्द्धशासकीय पत्र-** आवेदन पत्र, प्रार्थना पत्र, शिकायती पत्र, विभागीय पत्र आदि।

अब करने की बारी

1. मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध मेले कहाँ-कहाँ लगते हैं, जानकारी एकत्र कीजिए।
2. मेले का चित्र बनाइए जिसमें विभिन्न वस्तुओं की दुकानें, झूले एवं जादू-सर्कस के दृश्य सम्मिलित हों।
3. अपने नगर, ग्राम में लगने वाले किसी मेले का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए। पत्र कक्षा में सुनाइए।
4. मेले में बिकने वाली वस्तुओं की सूची तैयार कीजिए।
5. अपने विद्यालय स्तर पर बाल-मेला आयोजित कीजिए, जिसमें आप सभी छात्र ही क्रेता और विक्रेता हों।

0